ISSN: 2582-7219

# International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology

*(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)*

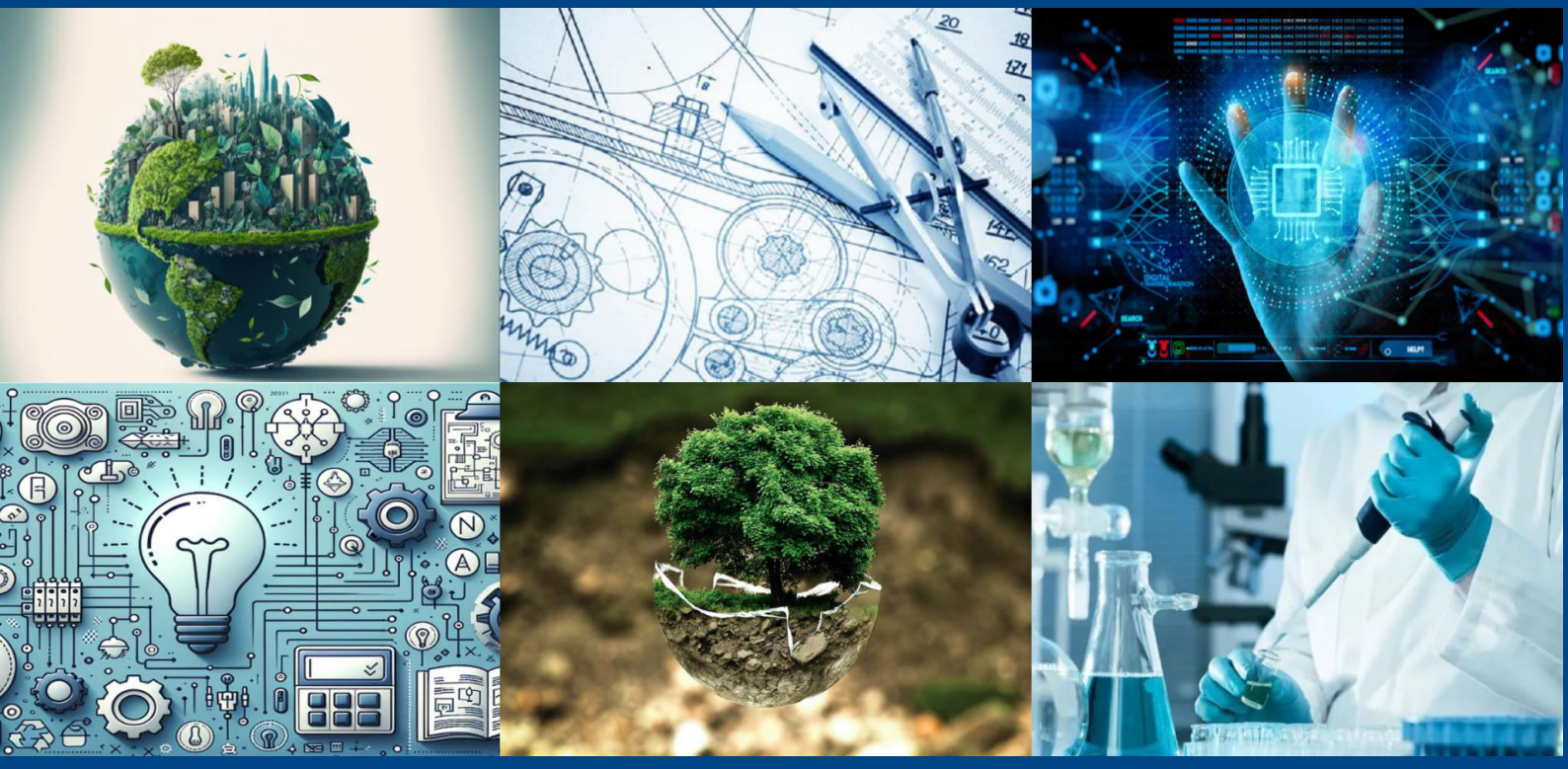

**Impact Factor: 8.206** **Volume 8, Issue 3, March 2025**

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 3, March 2025| DOI: 10.15680/IJMRSET.2025.0803344

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

# गांधीवादी विचारधारा की वैश्विक समस्याओं के समाधान में उपादेयता

**Rekha Suthar**

NET in political science, Fatehpur, Tehsil -Khamnor (Rajsamand) Rajasthan, India

**शोध सारांश :-** गांधी ने अपने नाम के साथ किसी 'वाद' की स्थापना में कभी भी विश्वास नहीं किया। परन्तु फिर भी इसे केन्द्रीय मूल्य या कृपलानी ने इसे "गांधीवादी तरीका" कहा है। हमारे सामने यह अहिंसा और शान्ति की एक उत्कृष्ट विचारधारा के रूप में खड़ा है। 20वीं शताब्दी के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था ने बहुत से संगठनों और विचारधाराओं के कार्यों का अनुभव किया गया, परन्तु इनमे से कोई भी वैश्विक स्तर पर शान्ति की चिरस्थायी खोज की प्राप्ति नहीं कर पाई। परिणामस्वरूप, इस वर्तमान शताब्दी में गांधीवाद की प्रासंगिकता निर्विवाद बन गई है। यह अहिंसा के केन्द्रीय मूल्य पर आधारित समय की कसौटी पर खरी एक विचारधारा है जिसका मूलभूत उद्देश्य शान्ति प्राप्त करना है। वैश्विक शंकाओ और वाद-विवाद के बावजूद, समकालीन विश्व में इस दर्शन की अत्यधिक प्रासंगिकता है।

धन के केन्द्रीयकरण या फिर इसके असमान वितरण के कारण वर्तमान विश्व में आर्थिक असमानताएं विद्यमान हैं। गरीब देशों द्वारा न्यायसंगत व समानतावादी व्यवस्था की मांग को सुलझाया नहीं गया है। इसके विपरीत, केन्द्रीय आर्थिक वैश्विक एजेण्डा से अलग हटते हुए इस मुद्दे को हाशिए पर धकेल दिया गया है। यहां तक कि शीत युद्ध के बाद के युग में भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने विकासशील राज्यों की स्थितियों को सुधारने की अपेक्षा अधिक समस्याओं को पैदा कर दिया है। इस परिस्थिति में गांधी की ट्रस्टीशिप की अवधारणा महत्त्वपूर्ण बन जाती है। इस प्रकार की पद्धति में, सबके साथ समानता का व्यवहार किया जाता है, इसलिए किसी का किसी के द्वारा शोषण नहीं होता है। अमीर का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह वंचित बंधुओं के कल्याण का ध्यान रखे।

यह पद्धति विकासशील देश की पुरानी मांग नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था को पूरा कर सकती है और इसके साथ ही यह मानवीय चेहरा वाली वैश्विक विकास को मजबूती प्रदान करती हैं। इस प्रकार से गॉधीवादी मूल्यो को व्यवहार मे लाते हुए मानवतावादी समस्याओं जैसे हथियारो की दौड, आतंकवाद और पर्यावरण का ह्रास को हल किया जा सकता है।

## I. प्रस्तावना

परिवर्तित विश्व व्यवस्था-शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हुई जिसने विश्व की संरचनात्मक व कार्यात्मक गतिशीलता में परिवर्तन ला दिये। विश्व के लिए सामान्य तौर पर और विकासशील देशों के लिए विशेष तौर पर इन परिवर्तनों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों निहितार्थ थे। सकारात्मक रूप में, द्वि-ध्रवीय वैचारिक आधार पर बंटे संसार में प्रतियोगी प्रभाव निर्माण का युग समाप्त हो गया है। यहां तक कि एकमात्र बची महाशक्ति का एकपक्षीय वर्चस्व भी, विचारधार का अंत या पुंजीवादी की विजय के अर्थ के सन्दर्भ में स्थापित नही हो सका है। धीरे-धीरे ध्रवहीन विश्व व्यवस्था एक वास्तविकता बनती जा रही हैं जिसमें राज्यों के बहुत समूह सीमित क्षेत्रों में अधिपत्य का प्रयोग कर रहे है और अन्य राज्यों के लिए भी ऐसा ही करने के लिए स्थान छोड़ रहे हैं।

इसके अतिरिक्त, वैश्विक संस्थानिक संरचानाओं के सन्दर्भ में केन्द्र उन्मूख शक्तियों के पतन के साथ ही, कुछ क्षेत्रीय आर्थिक शक्तियों का फिर से मेल-मिलाप भी देखा जा सकता है। इस प्रक्रिया में कुछ नए क्षेत्रीय आर्थिक मंच अपनी शक्ति का बढ़ा रहे है और ऐसे ही अन्य मंचों से प्रतियोगिता नहीं करना चाहते हैं बल्कि अपने सदस्य देशों की स्थि को शक्ति प्रदान करना चाहते है। सदस्य देशों के बीच क्षेत्रीय मुक्त व्यापार मजबूती ग्रहण कर रहा है और मेल-मिलाप को बढावा दे रहा है। इसके साथ ही व्यापार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश व संयुक्त उद्यमों के क्षेत्र में अन्तर्समूह सहयोग देखा जा रहा है। यद्यपि, इन समूहों के बीच व्यापक स्तर पर नकारात्मक प्रतियोगिता दिखाई नहीं देती है।

इन दो सकारात्मक परिणामों के बावजूद, इन विकासों के सकारात्मक पक्ष भी सशक्त व प्रत्यक्ष है। राजनीतिक रूप से एक तरफ तो द्वि-ध्रुव के समाप्त होने से विश्व व्यवस्था में अस्थायीत्व की स्थिति पैदा हो गई है तो दूसरी ओर एकमात्र शक्ति के पास वर्चस्व का

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

लाभ है। इस शक्ति ने संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए हस्तक्षेपवादी भूमिका को आगे करके न केवल समस्या का निर्माण किया है बल्कि अमेरिका की आज्ञाकारिता न मानने के नाम पर और आदेश न मानने पर देशों के विरुद्ध "आक्रमण विरोध" के नाम पर अमेरीका को युद्ध छेड़ने के लिए प्ररित किया है। इसके अतिरिक्त, अमेरिका के नेतृत्त्व में एक मात्र उपलब्ध सैन्य गंठधन व्यवस्था-नोटो-की बढ़ती भूमिका से अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का ढांचा ही अव्यवस्थित हो गया है। इसी तरह, विकासशील देशों के मंचों जैसे गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के कमजोर हो जाने से यें देश हाशिए पर चले गये हैं इस प्रकार वैशविक व्यवस्था उस दौर से गुजर रही है जिसमे विकसशील देशों को अपनी स्वायत्तता की सुरक्षा करने में या वैश्विक व्यवस्था में अपने लिए स्थान बनाने में कठिनाई का अनुभव हो रहा है।

आर्थिक तौर पर एक तरफ तो उदारीकरण, निजीकरण और भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया (एल.पी.जी.) के शुरू होने से विकासशील देशों में सीमा के झंझट समाप्त हो गए है और यहां विकसित देशों का माल निर्बाध गति से आ रहा है तो दुसरी ओर इस प्रक्रिया ने उत्पादन और वितरण के पूंजीवाद ढंग को मजबूती प्रदान की है। इसके अतिरिक्त, इस प्रक्रिया ने दो जुड़वा संस्थाओं आई.एम.एफ. और वर्ल्ड बैंक के होने के बावजूद विश्व व्यापार संगठन (डब्यू.टी.ओ.) के रूप में तीसरे संस्थानिक व्यवस्था की स्थापना से ब्रटेल वुडस मॉडल को मजबूत प्रदान की है। व्यापक पैमाने पर व्यापर के रूप में "दक्षिण अपने बजारों को उत्तर के देशों के लिए खोल रहा है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश या संयुक्त उपक्रम को अपनाने वाले देशों की आर्थिक स्थितियों में कोई सुधार नहीं हुआ है। इन देशों में अमीर व गरीब के बीच निरंतर अंतर बढ़ रहा है। जिसके कारण सामाजिक तनाव, राजनीतिक उथल पुथल और ऐसी अन्य समस्याएं उभरकर सामनें आई है।

शीत युद्ध के बाद एक नए विश्व परिदृष्य उभरने से मानवतावादी सरोकार, हथियारों की दौर आतंकवाद और पर्यावरण ह्रास के रूप में, चिंताजनक स्थिति में पहुच गए है। यद्यपि हथियारों की दौड़ की समस्या काफी दशकों से है, परन्तु वर्तमान समय में व्यापक स्तर पर तबाही मचाने वाले हथियारों के प्रयोग का निरंतर भय बना रहता है। इसलिए वर्तमान समय में यह मुद्दा गंभीर विस्तार के संभावित परिणामों को लिए है। इसके अतिरिक्त, परमाणु अप्रसार संधि को अनिश्चितकाल तक बढ़ाने की स्वीकृति से भी परमाणु प्रसार की प्रक्रिया पर रोक नहीं लग पाइ है।
कुछ देशों ने न केवल व्यापक परीक्षण प्रतिबन्ध सन्धि को यह कहकर ठुकरा दिया है कि यह परमाणु प्रसार सन्धि के दायरे में नहीं आती है बल्कि इस सन्धि का प्रस्ताव करने वाले देश अमेरिका की सीनेट ने भी इसे मजूरी नही दी है। इसके विपरित, परमाणु क्लब में अब तीन नए सदस्यों (दक्षिण कोरिया,भारत और पाकिस्तान) के आने से अब परमाणु-5, परमाणु-8 बन गया है। इस बढोतरी का चाहे कोई भी औचित्य हो, या इस पर वाद-विवाद हो, एक बात निश्चित है। इस शस्त्र होड़ ने एक गंभीर आयाम ग्रहण कर लिया है। नए देशों पर नियंत्रण लगाने का प्रयास किया जा रहा है। दवाबकारी कूटनीति के द्वारा इन देशों पर शिकंजा कसा जा रहा है, परन्तु इस प्रकार के विकास के घातक परिणामों के बारे में अनिश्चिता की स्थिति बनी हुई है।

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लिए आंतकवाद, विशेषकर इसकी बढ़ती उच्च तकनीकी प्रकृति के कारण एक अन्य गंभीर समस्या है। जिसका यह व्यवस्था सामना कर रही है। 9/11 के बाद से यह मुद्दा अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बन गया है, आतंकवाद के इस चेहरे ने यह दर्शाया है कि विश्व का शक्तिशाली देश भी इसकी चपेट में आ सकता है। इसका परिणाम यह हुआ कि अल-कायदा को समाप्त करने के लिए विश्व के कई भागों को नष्ट किया गया। परन्तु अफगानिस्तान में भारी बमबारी के बावजूद और विश्व के अन्य भागों मे की गई कार्यवाही के बावजूद अल-कायदा को समाप्त नहीं किया जा सकता है। आतंकवाद वास्तव में उत्तर-आधुनिक युद्ध संघर्ष है- अनियतरूपी, भ्रामक, भावात्मक, व्यक्गित, मायावी और छितराया। इस प्रकार के यह राज्य की सत्ता के बाहर चला गया है। अन्तर्राष्ट्रीय संगठन न केवल आतंकवाद की धमकियों को नियंत्रित करने में असफल रहे हैं बल्कि इस शब्द की परिभाषा भी नहीं बना पाए हैं। इस प्रकार से पूर्ण अराजकता और अव्यवस्था की स्थिति में राष्ट्रों को अपना मार्ग ढुंढने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है और वे अंधेरे में मार्ग तलाश कर रहे है।

औद्योगिक विकास की तीव्र गति ने पर्यावरण ह्ास की गंभीर समस्या को उत्पन्न कर दिया है। संयुक्त राष्ट्र ने इस मामले पर चार अन्तर्राष्ट्रीय संयुक्त राष्ट्र सम्मेलनों का स्टॉकहोम (1972), नेरोबी (1982), रियो डी जेनेरियो (1982) और जोहानिसबर्ग (2002) में आयोजन किया, परन्तु पर्यावरण हास की समस्या अभी भी नहीं सुलझी है। इसके विपरीत, अन्तिम सम्मेलन पर तो भूमण्डलीकरण का प्रभाव दिखाई दे रहा था, बाध्यकारी उपायों की भूमिका को पूरी तरह से गैर सरकारी संगठनों व बहुराष्ट्रीय कम्मनियों के हवाले कर दिया गया था, और राज्य को उसकी जनता के प्रति जवाबदेही से पूरी तरह से वंचित कर दिया गया। कुछ महत्त्वपूर्ण संधियों जैसे से पूरी तरह से वंचित कर दिया गया।

© 2025 IJMRSET | Volume 8, Issue 3, March 2025| DOI: 10.15680/IJMRSET.2025.0803344

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

कुछ महत्त्वपूर्ण संधियों जैसे क्योटो को अभी भी लागू नहीं किया जा सकता है और न ही वैश्विक गर्माहट के मद्दे से निपटने के लिए प्रभावकारी कदम ही उठाए गए है। यहा तक की ''संपोषित विकास'' के लिए उपयुक्त नीति निर्देश अभी भी व्यवहार में नहीं आ पाए है। वैश्विक एजेण्डा पर विकसित विश्व पर यह दबाव डाल रहे हैं कि वें संरक्षण के लिए मानदण्ड़ो और सिद्धान्तों का पालन करें जबकि स्वयं वें पर्यावरण को हानि पहुंचाने में व्यस्त हैं।

## II. गांधीवादी मूल्यों का प्रयोग

गांधीवादी व्यवहार में ही उपरोक्त समस्यों का समाधान समाहित है। गांधीवाद के केन्द्रीय मूल्यों पर आधारित रणनीतियों को अपनाकर ही इन मुद्दों को सलझाया जा सकता है। इन मूल्यों का नीचे दिए गए ढंग से विस्तार किए जाने की आवश्यकता है। ऐसा प्रतीत होता है। कि अधिकांश राजनीतिक समस्यों का आधार राज्यों के बीच विश्वास कमी है। परिणामस्वरूप, तत्काल आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रों के बीच उस विश्वास को स्थापित किया जाए। इस प्रकार के संघर्ष को गांधी द्वारा प्रचारित अहिंसात्मक तकनीको के प्रयोग द्वारा सुलझाया जा सकता है। इसकी प्राप्ति के लिए तो नए संस्थानिक व्यवस्थाओं का विकास किया जाए या फिर सम्बद्ध देशों के व्यवहार में परिवर्तन निर्माण लाया जाए। इस सन्दर्भ में सम्बन्धित देशों के बीच विश्वास निर्माण उपाय को शुरू किया जा सकता है, यह उपाय सही दिशा में सही कदम हो सकता है।

इस पद्धति द्वारा इस बात की संभावना है कि देशों के मध्य आपसी विश्वास स्थापित हो जाए। इसके लिए सम्बन्धित पक्षों में सद्इच्छा का निर्माण किया जाता है। विश्वास बहाली को व्यक्ति का व्यक्ति से सम्बन्धों के रूप में ढ़ग-प्प् की कूटनीति का प्रयोग करके मजबूत किया जा सकता है। इस प्रक्रिया के द्वारा न केवल तात्कालिक समस्या सुलझ जाएगी बल्कि संभावना इस बात की भी है कि स्थायी शान्ति के लिए प्रत्याशा जाग उठेगी। हथियारो के लिए दौड की समस्या हथियारो के विकास की अपेक्षा कही अज्ञानता से जुडी समस्या है। हथियारो की दौड राज्यो के बीच अविश्वास से उपजी हैं।

इस प्रकार, अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि पडौसी देशो के बीच विश्वास किस तरह से पैदा किया जाए। इसे राज्य के व्यवहार और दृष्टिकोण में लाकर परिवर्त किया जा सकता है। जब कोई राज्य अपने कार्यो में इसे प्रदर्शित करेगा,तब अन्य देश भी ऐसा करेगा। इस प्रकार से एक सहयोगी राष्ट्र-राज्य की नैतिक शक्ति क्षेत्र में छाये तनावों को दूर कर सकती है। इस सन्दर्भ में गांधी ने माना है कि सदैव अन्य देशो द्वारा किस नीति का अनुसरण किया जाता है,इसे ध्यान में न रखकर देश एक पक्षीय निःशस्त्रीकरण की ओर आगे बढे। आतंकवाद की समस्या युद्व के विकास की नही है बल्कि यह इससे कही अधिक राजनीतिक व सामाजिक-मुद्दो से जुडी समस्या है। आंतकवाद की जड़े सामाजिक-मनोवैज्ञानिक कारको से जुडी है। यहां व्यक्ति का व्यवहार एक उपयुक्त कारक है।

परिणामतः अगर किसी भी समाधान में आतंकवादी की मानसिकता का परिवर्तित करने की बात नही है, तब वह सफल नही हो सकता है। यहॉ पर गॉधीवादी मूल्यो की प्रासंगिकता बढ जाती है। गॉधीवाद का विश्वास है कि जो व्यक्ति इस प्रकार की गतिविधियों में शामिल है,उनका हृदय परिवर्तन किया जा सकता है। गांधी का विश्वास है कि व्यक्ति का आत्मा का रूपान्तरण किए बिना समाज मे सुधार नही लाया जा सकता है।इसलिए स्थायी शान्ति और आतंकवाद की समस्या के पूर्ण समाधान के लिए व्यक्ति के व्यवहार में सुधार आवश्यक है।

## III. निष्कर्ष

पर्यावरण से जुडी समस्या का मुख्य कारण तकनीकी रूप से विकसित देशो की तृष्णा है। ये देश अपने देश को मजबूत करने और आर्थिक स्थिति मे मजबूती लाने के लिए सारा धन इकठ्ठा करके प्रकृति के सारे संसाधनो पर कब्जा जमाना चाहते है। कुछ देशो की यह शोषणकारी प्रकृति विश्व समाज के एक व्यापक क्षेत्र के समस्याएं पैदा कर रही है। गांधीवाद का मानना है कि प्रकृति ने प्रत्येक वस्तु को पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध किया हुआ है जिससे सबकी तृष्णा की नही बल्कि सबकी आवश्यकताएं पूरी हो जाती है। इसलिए व्यक्ति को आवश्यकताओं की निरंतर पूर्ति के लिए संपोषित विकास का समर्थन करता ळें धन के केन्द्रीयकरण या फिर इसके असमान वितरण के कारण वर्तमान विश्व में आर्थिक असमानताएं विद्यमान हैं। गरीब देशों द्वारा न्यायसंगत व समानतावादी व्यवस्था की मांग को सुलझाया नहीं गया है। इसके विपरीत, केन्द्रीय आर्थिक वैश्विक एजेण्डा से अलग हटते हुए इस मुद्दे को हाशिए पर धकेल दिया गया है। यहां तक कि शीत युद्ध के बाद के युग में भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने विकासशील राज्यों की स्थितियों को सुधारने की अपेक्षा अधिक समस्याओं को पैदा कर दिया है।

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 8.206| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

इस परिस्थिति में गांधी की ट्रस्टीशिप की अवधारणा महत्त्वपूर्ण बन जाती है। इस प्रकार की पद्धति में, सबके साथ समानता का व्यवहार किया जाता है, इसलिए किसी का किसी के द्वारा शोषण नहीं होता है। अमीर का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह वंचित बंधुओं के कल्याण का ध्यान रखे। यह पद्धति विकासशील देश की पुरानी मांग नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था को पूरा कर सकती है और इसके साथ ही यह मानवीय चेहरा वाली वैश्विक विकास को मजबूती प्रदान करती हैं। इस प्रकार से गॉधीवादी मूल्यो को व्यवहार मे लाते हुए मानवतावादी समस्याओं जैसे हथियारो की दौड, आतंकवाद और पर्यावरण का ह्रास को हल किया जा सकता है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1.तिवारी विवेकानन्द : अछूत मतवाद के सच : गॉधी और अम्बेडकर सस्ता साहित्य प्रकाशन मण्डल, नई दिल्ली, 2011
2.उपाध्याय हरिभाऊ : बापू - कथा 1920-1948, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, 2002
3.गॉधी मोहनदास करमचन्द : सत्य के साथ मेरे प्रयोग, आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1947
4.भट्टाचार्य एस.एन : महात्मा गॉधी : एक पत्रकार , राष्ट्रीय गॉधी म्यूजियम और माणक प्रकाशन ,नई दिल्ली, 2000
5.गॉधी मोहनदास करमचन्द : सत्य के साथ मेरे प्रयोग , आत्मकथा , नवजीवन प्रकाशन मंदिर , अहमदाबाद - 1947, पृष्ठ 258
6.वही, 1947, पृष्ठ 259
7.गॉधी: नवजीवन (पत्र) 'विदेशी माध्यम की बुराई' अहमदाबाद, 2 सितम्बर ,1921
8.गॉधी: 'स्वराज्य का अर्थ, नवजीवन (पत्र), अहमदाबाद, 27 जनवरी , 1925
9.गॉधी: 'संतति- नियमन , नवजीवन (पत्र) , अहमदाबाद, 12 मार्च, 1925
10.गॉधी: 'समाचार-पत्र, नवजीवन (पत्र), अहमदाबाद, 1 अप्रैल, 1926

**पत्र - पत्रिकाएँ**

1.प्रतियोगिता दर्पण
2.सिविल सर्विसेज टाइम्स
3.क्रॉनिकल
4.योजना
5.कुरूक्षेत्र
6.इण्डिया टूडे

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

# INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

## IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com